RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
Refreed Journal

रासो

अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-16, अंक-4, सितम्बर अक्टूबर नवम्बर 2023

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
Refreed Journal

रासो

इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-16 अंक - 4 सितम्बर-अक्टूबर-नवम्बर-2023

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

निदेशक
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

संरक्षक

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** - पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सलाहकार मण्डल

* **प्रो. विभा उपाध्याय** - प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** - प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** - पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** - पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** - सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंध अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** - पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** - आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** - पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
डॉ. रीता पारीक
प्राचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. मृत्युंजय शर्मा
सह-आचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ सहायक सम्पादक
डॉ. निष्काम शर्मा

☆ शब्द संयोजन
मुकेश कुमार माहेश्वरी

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
सृजन संस्थान,
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
सृजन संस्थान,
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर दूरभाष : 0145-2442701

सहयोग दर

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

राष्ट्रीय जनजागरण में आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं की देन

राहुल कुमार
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं द्वारा राष्ट्रीय जन-जागरण में दिया गया योगदान भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की व्यापक प्रक्रिया से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। वास्तव में भारतीय पत्रकारिता और भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास समानांतर रूप से विकसित हुआ है। पत्रकारिता आधुनिकता की एक विशिष्ट उपलब्धि मानी जाती है और भारत में आधुनिक चेतना का प्रवेश नवजागरण के साथ हुआ। इस नवजागरण ने भारतीय समाज के संपूर्ण ढाँचे में परिवर्तन की आकांक्षा को जन्म दिया। सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, धार्मिक अंधविश्वासों के खंडन तथा राजनीतिक चेतना के विस्तार के लिए पत्रकारिता एक प्रभावशाली माध्यम के रूप में उभरी।

राजा राममोहन राय द्वारा प्रारंभ किए गए सुधारवादी आंदोलन ने भारतीय समाज में बौद्धिक जागृति का सूत्रपात किया। उनके प्रयासों से न केवल सामाजिक-धार्मिक सुधार की चेतना फैली, बल्कि राष्ट्रीयता की भावना को भी वैचारिक आधार प्राप्त हुआ। ब्रह्मसमाज के माध्यम से जिस सुधारात्मक परंपरा की नींव पड़ी, उसी परंपरा से प्रेरणा लेकर लगभग पचास वर्ष बाद आर्य समाज की स्थापना हुई। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के माध्यम से वैदिक धर्म के शुद्ध स्वरूप की स्थापना, सामाजिक कुरीतियों के विरोध और राष्ट्रीय आत्मगौरव के पुनरुत्थान का लक्ष्य रखा। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संगठन, व्याख्यान, उपदेश और विशेष रूप से पत्र-प्रकाशन को माध्यम बनाया गया।

आर्य समाज की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उसने जनसाधारण तक पहुँचने के लिए उत्तर भारत की व्यापक जनभाषा हिन्दी को अपनाया। आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं ने धर्म, समाज और राजनीति— तीनों क्षेत्रों में जनचेतना को जाग्रत किया। उन्नीसवीं शताब्दी की आर्य पत्रकारिता उस वैचारिक क्रांति की वाहक बनी, जिसने बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में उग्र राष्ट्रवाद को स्वर प्रदान किया। इन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से स्वदेशी भावना, आत्मसम्मान, वैदिक संस्कृति के गौरव तथा विदेशी शासन के शोषणकारी स्वरूप का निर्भीक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

भारतीय पत्रकारिता की विकास-कथा वस्तुत: भारतीय राष्ट्रीयता के विकास की ही कथा है। यदि राष्ट्रवादी चेतना ने पत्रकारिता को दिशा प्रदान की, तो पत्रकारिता ने भी राष्ट्रवाद के प्रसार के लिए उपयुक्त वैचारिक भूमि तैयार की। राजा राममोहन राय से लेकर महात्मा गांधी तक भारतीय पत्रकारिता का स्वरूप निरंतर बदलता रहा और प्रत्येक चरण में पत्र-संपादक तथा लेखक अपने राष्ट्रीय दायित्वों के प्रति पूर्णत: सजग दिखाई देते हैं। पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के प्रसार के साथ-साथ मुद्रण कला और पत्रकला के विकास से अंग्रेज सरकार आशंकित थी, क्योंकि उसे यह स्पष्ट रूप से ज्ञात था कि जागरूक प्रेस उसके साम्राज्यवादी

शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।

हितों के लिए चुनौती बन सकता है।

सन् 1857 के विद्रोह के पश्चात भारत में प्रेस का विकास अपेक्षाकृत तीव्र गति से हुआ। अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं ने ब्रिटिश शासन की नीतियों, प्रशासनिक दुर्बलताओं और भारतीय जनता की शिकायतों को निर्भीकता से उजागर करना आरंभ किया। इसी क्रम में भारतीय राष्ट्रवाद के उभरते स्वर पत्रकारिता के माध्यम से मुखर हुए। यद्यपि 'इण्डिया गजट' और 'समाचार दर्पण' जैसे पत्र पहले से प्रकाशित हो रहे थे, फिर भी 'संवाद कौमुदी' और 'मिरात-उल-अखबार' को भारत की प्रारंभिक राष्ट्रवादी और सुधारवादी पत्र-पत्रिकाओं के रूप में विशेष महत्त्व प्राप्त है।

आगे चलकर देश के विभिन्न भागों में भारतीय भाषाओं के समाचार-पत्रों का विकास हुआ। 'बम्बई समाचार', 'बंगदूत', 'जाम-ए-जमशेद', 'राफत-गुफ्तार', 'सोम प्रकाश' और 'प्रभाकर' जैसे पत्रों ने समाज-सुधार, राष्ट्रीय पुनरुत्थान और राजनीतिक चेतना के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन पत्रों ने किसानों, श्रमिकों और शोषित वर्गों के पक्ष में आवाज़ उठाकर अंग्रेजी शासन और उसके समर्थक जमींदार वर्ग का खुला विरोध किया।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक पत्र, जैसे 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'स्टेट्समैन' और 'सिविल एण्ड मिलिटरी गजट', प्राय: ब्रिटिश साम्राज्यवादी हितों के समर्थक थे और आर्य समाज आंदोलन के आलोचक भी। इसके विपरीत, 'हिन्दु पैट्रियट', 'हिन्दु मिरर', 'नवशक्ति', 'संध्या' तथा विशेष रूप से 'अमृत बाजार पत्रिका' जैसे राष्ट्रवादी पत्रों ने स्वाधीनता संघर्ष को वैचारिक शक्ति प्रदान की। 'अमृत बाजार पत्रिका' की निर्भीक राष्ट्रवादी नीति के कारण उसे ब्रिटिश सरकार के दमन का सामना करना पड़ा, फिर भी उसने अपने राष्ट्रीय दृष्टिकोण से कोई समझौता नहीं किया।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतीय राष्ट्रवादी चेतना के विकास में अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं की पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका अत्यन्त निर्णायक रही। सन् 1879 में सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने राष्ट्रीय आन्दोलन की उदारवादी विचारधारा को स्वर देने के उद्देश्य से अंग्रेजी भाषा में 'दि बंगाली' नामक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। यह पत्र संवैधानिक सुधारों, प्रशासनिक अन्याय और भारतीयों के नागरिक अधिकारों से जुड़े प्रश्नों को विवेकपूर्ण किन्तु निर्भीक ढंग से उठाता था। 'दि बंगाली' ने शिक्षित मध्यमवर्ग में राजनीतिक चेतना को सुदृढ़ किया और उदारवादी राष्ट्रवाद की वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार की।

सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के ही प्रेरणा-प्रोत्साहन से सर दयालसिंह मजीठिया ने सन् 1877 में लाहौर से अंग्रेजी दैनिक 'ट्रिब्यून' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। यह पत्र उदारवादी राष्ट्रीयता का समर्थक था और शीघ्र ही पंजाब में अत्यन्त लोकप्रिय हो गया। 'ट्रिब्यून' ने प्रशासनिक सुधार, शिक्षा, आर्थिक शोषण और भारतीयों की राजनीतिक भागीदारी जैसे विषयों को प्रमुखता से उठाया तथा उत्तर भारत में राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

जैसे-जैसे भारतीय पत्रकारिता का विकास होता गया, वैसे-वैसे ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियाँ भी तीव्र होती चली गईं। लार्ड वेलेजली के शासनकाल में भारतीय पत्रों की आवाज़ को दबाने के उद्देश्य से पहला कठोर प्रेस कानून बनाया गया। इसके बाद लार्ड हेस्टिंग्स ने यद्यपि सेंसरशिप के नियमों में कुछ शिथिलता की, किन्तु उनके उत्तराधिकारी लार्ड एडम ने 14 मार्च, 1823 को ऐसे प्रेस नियम घोषित

किए जो वेलेजली की व्यवस्था से भी अधिक कठोर थे। इन नियमों का उद्देश्य भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता को पूर्णत: नियंत्रित करना था।

लार्ड लिटन के शासनकाल (1876-1880 ई.) में अपनाई गई अल्पदर्शी और दमनकारी नीतियों ने भारतीय पत्रकारिता को गहरी उत्तेजना प्रदान की। यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक प्रगति के मार्ग में क्रूर शासक अनेक बार अनजाने में वरदान सिद्ध हो जाते हैं, क्योंकि उनके अत्याचार जन-प्रतिरोध को तीव्र कर देते हैं। सन् 1879 में पारित वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट को भारत के शिक्षित वर्ग ने 'गैगिंग ऐक्ट' की संज्ञा दी। इस अधिनियम के द्वारा भारतीय भाषाओं के समाचार-पत्रों की स्वतंत्रता का खुला हरण किया गया। परिणामस्वरूप अंग्रेज सरकार के प्रति विद्रोह की भावनाएँ तीव्र हुईं और राष्ट्रवाद की लहर और अधिक प्रबल हो गई।

सन् 1889 में वीर राघवाचारी तथा अन्य देशभक्तों के संयुक्त प्रयास से मद्रास से अंग्रेजी साप्ताहिक 'दि हिन्दू' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। यह पत्र उदारवादी राष्ट्रीयता का समर्थक था, परन्तु भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नीतियों का विवेकपूर्ण एवं कभी-कभी कठोर आलोचक भी था। दक्षिण भारत में 'दि हिन्दू' ने राजनीतिक चेतना को सुदृढ़ किया और प्रेस को एक सशक्त जनमंच के रूप में स्थापित किया।

इसी काल में बंगाल में बंगला साप्ताहिक 'बंगवासी' तथा दैनिक 'वसुमति' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। ये पत्र रूढ़िवादी हिन्दुत्व के समर्थक थे और बंगाल में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बल प्रदान करते थे। कलकत्ता से प्रकाशित इस युग का एक अन्य प्रभावशाली पत्र साप्ताहिक 'सार सुधानिधि' (सन् 1879) था, जो यद्यपि स्वामी दयानन्द और अन्य धार्मिक-सामाजिक सुधारकों का विरोधी था, फिर भी उसमें प्रखर राष्ट्रभाव विद्यमान था। इससे यह स्पष्ट होता है कि विचारधारात्मक भिन्नताओं के बावजूद राष्ट्रवाद उस समय की पत्रकारिता का केन्द्रीय तत्त्व बन चुका था।

स्वाधीनता आन्दोलन के प्रमुख सेनानी बाल गंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल, अरविन्द घोष, वारीन्द्र घोष तथा लाला लाजपतराय ने भारतीय राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करने के लिए प्रेस की शक्ति का व्यापक उपयोग किया। लोकमान्य तिलक द्वारा प्रकाशित 'मराठा' और 'केसरी' महाराष्ट्र में उग्र राष्ट्रवाद के सशक्त स्तम्भ बनकर उभरे। 'मराठा' का प्रकाशन 2 जनवरी, 1880 को तथा 'केसरी' का प्रकाशन 4 जनवरी, 1880 को हुआ। 'मराठा' अपेक्षाकृत संयमित और विवेचनात्मक था, जबकि 'केसरी' अधिक उग्र, प्रेरक और जन-उत्तेजक स्वर में लिखता था। कहा जाता है कि 'केसरी' उकसाता था और 'मराठा' समझाता था।

बंगाल में अरविन्द घोष द्वारा संपादित 'वन्देमातरम्' और स्वामी विवेकानन्द के छोटे भाई भूपेन्द्र दत्त द्वारा प्रकाशित 'युगान्तर' ने समूचे बंगाल को क्रान्तिकारी विचारों से भर दिया। इन पत्रों ने आत्मबलिदान, स्वराज और सशस्त्र प्रतिरोध जैसी अवधारणाओं को वैचारिक आधार प्रदान किया। विपिनचन्द्र पाल के 'न्यू इण्डिया' ने बंग-भंग विरोध, स्वदेशी कार्यक्रम और बहिष्कार आन्दोलन को नई दिशा और उत्प्रेरणा दी।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से भारतीय पत्रकारिता ने राष्ट्रीय जन-जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बम्बई के पारसी बैराम जी मलाबारी का 'इण्डियन स्पेक्टेटर' ऐतिहासिक 'एज ऑफ कन्सेंट बिल' पर जनमत जाग्रत करने में अग्रणी रहा। इसी शहर से प्रकाशित 'इण्डियन सोशल रिफार्मर' (1890) ने राष्ट्रीय चेतना और समाज सुधार दोनों को प्रोत्साहित किया। सन् 1899 में सच्चिदानन्द सिन्हा ने अंग्रेजी मासिक

'हिन्दुस्तान रिव्यू', और 1900 में जी. ए. नटेशन ने 'इण्डियन रिव्यू' प्रकाशित किया। रामानन्द चटर्जी का 1907 का 'मार्डन रिव्यू' कांग्रेस की दक्षिणपन्थी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता था।

सूरत-भंग के बाद सर फिरोजशाह मेहता ने नरम दल के विचारों के प्रसार हेतु 1913 में 'बम्बई-क्रानिकल' आरम्भ किया। होमरूल आन्दोलन को गति देने के लिए श्रीमती एनी बेसेन्ट ने 'मद्रास स्टैन्डर्ड', 'न्यू इण्डिया' और 'कामन व्हील' प्रकाशित किए। 1918 में सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी का साप्ताहिक 'सर्वोन्ट ऑफ इंडिया' उदारवादी राजनीतिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधि था।

सन् 1919 में महात्मा गांधी ने 'यंग इण्डिया' और साप्ताहिक 'हरिजन' के माध्यम से राजनीति में प्रवेश किया। मोतीलाल नेहरू ने 'इण्डिपेण्डेण्ट', शिवप्रसाद गुप्त ने हिन्दी 'आज' प्रकाशित किया। 1920 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन के बाद हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय चेतना दोनों में तेजी आई। गांधी युग में साहित्यिक और राजनीतिक पत्रकारिता पृथक हुई। 1942 तक सत्रह भाषाओं में चार हजार से अधिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही थीं, जिनमें अधिकांश गांधी दर्शन से प्रभावित और सत्याग्रह आंदोलन के प्रति प्रतिबद्ध थीं, जबकि कुछ प्रतिक्रियावादी भी थीं।

आर्य पत्रकारिता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :

सन् 1867 में हिन्दी पत्रकारिता में दो महत्वपूर्ण शक्तियों का उदय हुआ—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और स्वामी दयानन्द। भारतेन्दु साहित्यिक पत्रकारिता के अग्रदूत थे और उन्होंने 'कविवचन सुधा' (1867-1885) के माध्यम से साहित्यिक जागरण की नींव रखी। उनके पत्र साहित्यिक और सामाजिक चेतना का संवाहक बने। दूसरी ओर स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज के धार्मिक-सामाजिक सिद्धान्तों के प्रचार हेतु पत्र-पत्रिकाओं का संचालन किया और समाज में सुधार एवं जागृति का मार्ग प्रशस्त किया। इन दोनों की सक्रियता ने हिन्दी पत्रकारिता को सशक्त और राष्ट्रवादी दृष्टि प्रदान की। आर्यसमाज की पत्रिकाएँ धार्मिक दृष्टिकोण के प्रचार में इतनी प्रभावशाली थीं कि ईसाई मिशनरियों के मध्य उत्तेजना उत्पन्न हुई। डॉ. रामरतन भटनागर के अनुसार 1880 के पश्चात आर्यसमाज और ईसाई प्रचारकों के बीच पत्र-पत्रिकाओं में शाब्दिक युद्ध आम हो गया।

आर्यसमाज आन्दोलन के प्रारंभिक 45 वर्षों (1875-1920) में कई मासिक, साप्ताहिक और पाक्षिक पत्र प्रकाशित हुए। आरम्भ में अधिकांश पत्र उर्दू में थे, किन्तु धीरे-धीरे हिन्दी का प्रचलन बढ़ा। मेरठ इस क्षेत्र का प्रमुख केंद्र था, जहाँ 1878 में 'आर्य समाचार', 1879 में 'भारत-सुदशा प्रवर्तक' और 1880 में 'आर्य दर्पण' प्रकाशित हुए। बाद में 'वेद प्रकाश' (1884), 'आर्य विनय' (1885), 'आर्य सिद्धान्त' (1887), 'आर्यावर्त' (1887), 'भारत भगिनी' (1888), 'राजस्थान समाचार' (1889), 'परोपकारी' (1890), 'तिमिर नाशक' (1890), 'ब्रह्मावर्त' (1890), 'पांचाल पंडिता' (1897) और 'आर्य मित्र' (1897) जैसी पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं। 'आर्य मित्र' उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र था और आज भी निरन्तर प्रकाशित हो रहा है।

मासिक 'दयानन्द पत्रिका' (1907) पं. तुलसीराम द्वारा मेरठ से प्रकाशित हुई और 'भारतोदय' (1909) गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर का मासिक पत्र था। इन पत्रों के सम्पादक पं. पद्मसिंह शर्मा, नरदेव शास्त्री, डॉ. हरिशंकर शर्मा आदि राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त आचार्य थे। आर्यपत्रों ने अपने लेखों, संपादकीय टिप्पणियों और वैदिक शिक्षाओं के माध्यम से जनता में धर्म-जागरूकता, समाज सुधार और राष्ट्रीय चेतना

का संचार किया। 'वेद प्रकाश' में मंत्र, शास्त्रार्थ, ईश्वर भक्ति, मूर्तिपूजा, पुनर्जन्म, विधवा विवाह, बाल विवाह, जाति-पांति निषेध, अछूतोद्धार, मादक द्रव्यों का निषेध, गुरुकुल शिक्षा और राष्ट्रभाषा हिन्दी आदि लगभग 200 विषयों पर लेख प्रकाशित हुए।

1910-1920 के काल में आर्यपत्रों में राष्ट्रीयता की अधिक गूंज सुनाई देने लगी। लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज जैसे नेताओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। गुरुकुल एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार हुआ। आर्यपत्रों ने नवयुवकों में देशभक्ति, वीरता, धर्म प्रेम, स्वराज्य और स्वभाषा के प्रति जागरूकता उत्पन्न की। शुद्धि आन्दोलन, अछूतोद्धार, दलितोद्धार और स्वदेशी कार्यक्रमों के समर्थन में इन पत्रों ने क्रान्तिकारी स्वर अपनाया।

आर्य पत्रकारिता ने न केवल धर्म और समाज सुधार में योगदान दिया, बल्कि राष्ट्रीय चेतना, स्वाधीनता आंदोलन और सांस्कृतिक जागरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके माध्यम से आर्यसमाज ने वैदिक धर्म के प्रचार, सामाजिक कुप्रथाओं के उन्मूलन और हिन्दी भाषा की उन्नति में भी सराहनीय योगदान दिया। इस प्रकार आर्य पत्रकारिता ने अपने साहित्यिक, धार्मिक और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से भारतीय समाज में युगांतकारी परिवर्तन लाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

उत्तर भारत में हिन्दी पत्रकारिता का न केवल जन्म, बल्कि उसका सुदृढ़ विकास भी आर्य पत्रकारों द्वारा किया गया। आर्य पत्रकारिता के प्रारम्भिक उन्नायक जातीय चेतना, युग धर्म और समाज के प्रति अपने महत्त्वपूर्ण दायित्वों से पूर्णत: अवगत थे। उन्नीसवीं शताब्दी में हिन्दी प्रचार की चेष्टा और आर्य समाज सुधार आन्दोलन अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद तेज और पुष्ट रही। इसका प्रमाण प्रारम्भिक आर्य सामाजिक पत्रों के जीर्ण-शीर्ण पृष्ठों पर मुखर रूप में मिलता है।

उस युग में पत्रकारों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। उन्हें एक ओर सरकारी दमन नीति से लड़ना था और दूसरी ओर समाज की रूढ़िवादी कूप-मण्डूकता के विरुद्ध संघर्ष करना था। प्रचार-प्रसार के साधन अविकसित थे और प्रकाशन, मुद्रण तथा वितरण का सम्पूर्ण दायित्व सम्पादक पर ही निर्भर था। इसके बावजूद इन पत्रकारों की निष्ठा और उत्साह अदम्य था। वे अपने पत्रों को केवल प्रकाशित ही नहीं करते थे, बल्कि ग्राहकों को पढ़- पढ़ कर सुनाने तक की परंपरा निभाते थे। इस कठिन प्रयास द्वारा उन्होंने लोक रुचि का परिमार्जन और उन्नयन किया तथा जनता में जागरूकता और चेतना का संचार किया।

आर्य पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रवाद से ओतप्रोत है। स्वधर्म, स्वभाषा, स्वदेशी प्रचार और राष्ट्रीय चेतना का विकास इसके मूल तत्व थे, और स्वराज्य इसके अगला कदम माना गया। इसी कारण विदेशी शासन की दमन नीति का उन्हें शिकार होना पड़ा और उन्हें नृशंस व्यवहार एवं यातनाएँ झेलनी पड़ीं। स्वतंत्र चेतना और विदेशी राज एक साथ नहीं चल सकते; समाज और देश के प्रति प्राणोत्सर्ग के बिना साम्राज्यवाद का विरोध संभव नहीं था। उस युग के पत्रकार जानते थे कि उनके लेख का असर व्यापक होगा और इसके परिणामस्वरूप उन्हें भारी यन्त्रणा सहनी पड़ सकती है, फिर भी वे समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए हर क्षण तत्पर रहते थे।

निष्कर्षत: आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं ने हिन्दी पत्रकारिता और भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में अहम भूमिका निभाई। भारतेन्दु और स्वामी दयानन्द ने साहित्य, धर्म-सुधार और राष्ट्रीय चेतना के प्रचार

के लिए पत्रों का प्रयोग किया। आर्यपत्रों ने समाज सुधार, महिला शिक्षा, जाति-पांति उन्मूलन, शुद्धि आन्दोलन और स्वदेशी कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया। कठिन परिस्थितियों और सरकारी दमन के बावजूद पत्रकारों की निष्ठा और साहस ने जनता में जागरूकता और राष्ट्रवाद फैलाया। इस प्रकार आर्य समाज की पत्रकारिता ने भारतीय समाज में धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना में युगांतरकारी योगदान दिया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भटनागर, रामरतन; राइज एण्ड ग्रोथ ऑफ हिन्दी जर्नलिज्म, पी-एच.डी. शोधप्रबंध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद: किताब महल, 1947*
2. *नेहरू, जवाहरलाल; मेरी कहानी, नई दिल्ली: सस्ता साहित्य मण्डल, 1965*
3. *शर्मा, पं. गणेश प्रसाद; आर्यसमाज, फर्रुखाबाद का इतिहास, फर्रुखाबाद: आर्यसमाज भवन, 1953*
4. *गुप्त, लक्ष्मीनारायण; हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्यसमाज की देन, पी-एच.डी. शोधप्रबंध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, 1961*
5. *गृह राजनीतिक विभाग कार्रवाई, खण्ड बी, जनवरी 1909, सं. 106-112, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली*
6. *मिश्र, कृष्ण बिहारी; हिन्दी पत्रकारिता, पी-एच.डी. शोधप्रबंध, कलकत्ता विश्वविद्यालय, वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1968*
7. *गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के संग्रहालय, एवं गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के पुस्तकालय में उपलब्ध पत्र-पत्रिकाओं की संचिकाओं पर आधारित विवरण।*
8. *आर्यसमाज और हिन्दी पत्रकारिता की प्रारंभिक प्रगति एवं आर्यपत्रों का योगदान, इलाहाबाद: किताब महल, 1947*
9. *भारतेन्दु जी और स्वामी दयानन्द द्वारा आर्यसमाज और हिन्दी पत्रकारिता को गति देने का विवरण, इलाहाबाद: किताब महल, 1947*
10. *आर्य समाचार, बदरीदत्त जोशी, आर्यसमाज भवन, मेरठ, 1878*
11. *भारत-सुदशा प्रवर्तक, 1879, फर्रुखाबाद, आर्यसमाज भवन*
12. *वेद प्रकाश, 1884, तुलसीराम स्वामी, मेरठ: स्वामी प्रेस*
13. *दयानन्द पत्रिका, 1907, तुलसीराम स्वामी, मेरठ: स्वामी प्रेस*
14. *भारतोदय, 1909, ज्वालापुर: गुरुकुल महाविद्यालय*